2

मिस्त्र की सभ्यता : राजनीतिक विकास, कला, स्थापत्य एवं धर्म

[EGYPTIAN CIVILIZATION : POLITICAL DEVELOPMENT, ART, ARCHITECTURE AND RELIGION]

नील नदी घाटी सभ्यता या मिस्त्र की सभ्यता
(NILE VALLEY CIVILIZATION OR EGYPTIAN CIVILIZATION)

प्रारम्भिक समय में मानव का रहन-सहन लगभग जानवरों की ही तरह था। वह जानवरों के कच्चे माँस एवं कन्दमूल का सेवन कर अपना जीवन-यापन करता था। अपने तन को ढकने के लिए भी वह जानवरों की खाल का प्रयोग वस्त्र के रूप में करता था। अपनी रक्षा हेतु मानव ने पत्थर के औजारों का निर्माण किया एवं निवास के लिए वह गुफाओं का प्रयोग करता था। जैसे-जैसे समय बीतता गया आदिमानव ने अपने जीवन में अनेक क्रान्तिकारी परिवर्तन किये, जिससे उसका एक सभ्य मानव बनने का मार्ग प्रशस्त हुआ। अब मानव द्वारा आजीविका के लिए पशुओं के शिकार के अलावा माँस, दूध व बोझा ढोने के लिए भी उन्हें उपयोगी समझा जाने लगा अर्थात् पशुपालन करना सीखा, साथ ही कृषि कर्म को प्रारम्भ किया गया। उसने अपने सैकड़ों वर्षो के अनुभव से यह सीख लिया था कि मिट्टी में बीज डालने और सींचने से पौधा उगता है। नदियों के किनारे की मिट्टी उपजाऊ होती है। यहाँ जल आसानी से मिल जाता है। नदी से नाव या लट्ठे की सहायता से आवागमन की सुविधा रहती है। जानवरों हेतु घास और जल आसानी से प्राप्त हो जाता है। इन सभी कारणों से आदिमानव ने नदी घाटियों में बसना आरम्भ किया। कृषि क्रान्ति के पश्चात् मानव इतिहास में एक और परिदृश्य स्थापित हुआ। वह था नदी घाटी सभ्यताओं का विकास। विश्व के कई भागों में ऐसी सभ्यताएँ नदियों के किनारे या दोआब क्षेत्रों में विकसित हुईं इस कारण से इन्हें नदी घाटी सभ्यता कहा गया। इनमें मिस्त्र की सभ्यता, मेसोपोटामिया की सभ्यता, सिन्धु घाटी की सभ्यता और चीन की सभ्यता इत्यादि प्रमुख थीं। मिस्त्र की सभ्यता का विकास नील नदी घाटी में हुआ था। नील नदी में बाढ़ के कारण नील नदी का किनारा बह जाने से मिट्टी की उर्वरता पैदा की। मिट्टी की उर्वरता ने फसलों के पर्याप्त उत्पादन में सहायता की जिसने उस क्षेत्र के लोगों के जीवन को सशक्त किया और इसके साथ ही इस प्रक्रिया ने मिस्त्र के सामाजार्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवन के विकास में योगदान किया।

नील नदी घाटी की सभ्यता की भौगोलिक स्थिति
(GEOGRAPHICAL LOCATION OF THE NILE VALLEY CIVILIZATION)

नील नदी घाटी सभ्यता को मिस्त्र की सभ्यता भी कहा जाता है। मिस्त्र की भौगोलिक स्थिति दो क्षेत्रों से सम्बन्धित है यथा-उत्तरी-पूर्वी अफ्रीका तथा दक्षिण-पश्चिम एशिया मिस्त्र एक देश है जिसका अधिकांश भाग उत्तरी अफ्रीका में स्थित है जबकि इसका सिनाई प्रायद्वीप, दक्षिण-पश्चिम एशिया में एक स्थल पुल का निर्माण करता है। मिस्त्र अफ्रीका महाद्वीप के उत्तर-पूर्वी भाग में नील नदी की घाटी में स्थित है। मिस्त्र के उत्तर में भूमध्य सागर, पश्चिम में सहारा मरुस्थल, दक्षिण में सूडान तथा पूर्व में लाल सागर है। इसकी स्थलाकृति में मुख्य रूप से रेगिस्तानी पठार है लेकिन पूर्वी भाग नील नदी की घाटी द्वारा काटा गया है। मिस्त्र की राजधानी 'काहिरा' नील नदी घाटी में स्थित है। नील नदी अफ्रीका में स्थित है। यह भूमध्य रेखा के दक्षिण में बुरुण्डी से निकलकर उत्तर-पूर्वी अफ्रीका से होकर भूमध्य सागर में समाहित हो जाती है।

Scanned with OKEN Scanner

नील नदी की दो प्रमुख सहायक नदियाँ-ह्वाइट नील (White Nile) एवं ब्लू नील (Blue Nile) हैं। ह्वाइट नील नदी का उद्गम मध्य अफ्रीका के 'महान अफ्रीकी झील' इलाके से होता है, वहीं ब्लू नील का उद्गम क्षेत्र इथियोपिया की 'लेक टाना' है। नील नदी विश्व की सबसे लम्बी नदियों में शुमार है। इसकी लम्बाई लगभग 6,695 किमी. (4,160 मील) है। अफ्रीकी देश युगाण्डा के पर्वतों को मार्ग में काटकर नील नदी संकीर्ण व टेढ़े-मेढ़े रास्तों से होकर बहती है, इसके दोनों ओर की भूमि पतली पट्टी के रूप में शस्यश्यामला दिखायी देती है। यह पट्टी विश्व का सबसे बड़ा मरुद्यान है। आखिर में यह नदी छः पहाड़ों को काटने में असमर्थ हो जाती है, जिस वजह से वहाँ जलप्रपात की उत्पत्ति होती है और वहाँ से यह नीचे उतरती है। अन्तिम जलप्रपात के नील नदी की उत्तरी या निचली घाटी है; यहीं पर मिस्र अवस्थित है। इसी नदी पर मिस्र देश का प्रसिद्ध अस्वान बाँध बनाया गया है। इस बाँध का निर्माण बाढ़ से बचने के लिए किया गया है। चूँकि यहाँ नदी मन्द गति से बहती है, इस कारण यह काली मिट्टी को वहाँ छोड़ती रहती है। इस तरह वहाँ उपजाऊ मैदान का निर्माण होता है। इस नदी का तटवर्ती भाग उत्तरी मिस्र (नील नदी के मुहाने पर) तथा दक्षिणी मिस्र लगभग 10 मील से 20 मील तक पतली उपजाऊ मिट्टी है, जो कि कृषि और आवास के लिए लाभप्रद है। इस क्षेत्र में मिट्टी के लाने के पीछे कारण है कि गर्मियों में अफ्रीका में मूसलाधार पानी बरसने तथा नील की सहायक नदियों के उद्गम स्थल पर बर्फ पिघलने से यह किनारों को पारकर फैलती हुई अपने साथ मिट्टी लाकर इस घाटी में छोड़ती जाती है। नील नदी घाटी के दोनों तरह लीबिया का विशाल रेगिस्तान अवस्थित है। दूसरी तरह जहाँ नील नदी भूमध्य सागर में गिरती है, उस स्थान पर (मुहाने पर) हर साल मिट्टी छोड़ती रहती है। इसलिए उस स्थल पर बस्ती हेतु एक चौड़ी पट्टी का निर्माण हो गया है। इस स्थान पर ही सर्वाधिक लोग निवास करते हैं। भूमध्य रेखा पर हिमाच्छादित पर्वत चोटियाँ नील नदी का उद्गम क्षेत्र हैं। नील नदी इस चोटी से निकलकर उत्तर की ओर प्रवाहित होती है। भूमध्य रेखा वाले इस प्रदेश पर अत्यधिक वर्षा होती है। वर्षा और पिघली बर्फ के पानी से झीलों का निर्माण हुआ है जिन्हें वर्तमान में विक्टोरिया, एडवर्ड एवं अल्बर्ट के नाम से पुकारा जाता है। यही सीले नील नदी का मूल स्रोत है।

सबसे महत्वपूर्ण चीज जो नील नदी प्राचीन मिस्र के लोगों को उपलब्ध करवाती थी, वह है 'उपजाऊ भूमि'। प्रत्येक वर्ष नील नदी का जल स्तर बढ़ जाता है। इस कारण आस-पास के क्षेत्रों में बाढ़ आ जाती है। आरम्भ में भले ही यह बाढ़ कुछ नुकसान जरूर करती है, परन्तु इसकी वजह से उपजाऊ मिट्टी की नई परत का विस्तार हो जाता है। उल्लेखनीय है कि ज्यादातर मिस्र 'रेतीला' है, लेकिन नील नदी के आस-पास का इलाका काफी उपजाऊ है, जहाँ पर विभिन्न तरह की फसलें उगायी जाती हैं। पटसन, गेहूँ एवं कागज का पौधा 'पेपिरस' (Papyrus) यहाँ की प्रमुख फसलें हैं। अतः प्राचीन मिस्र की सभ्यता की सफलता, नील नदी घाटी की परिस्थितियों के मुनासिब ढलने की क्षमता से आंशिक रूप से प्रभावित थी। इस उपजाऊ घाटी में, आशा के मुताबिक बाढ़ तथा नियन्त्रित सिंचाई की वजह से जरूरत से अधिक फसल उत्पादित होती थी, जिसने सामाजिक विकास एवं संस्कृति को बढ़ावा दिया। संसाधन अधिक होने की वजह से प्रशासन ने घाटी तथा आस-पास के रेगिस्तानी इलाकों में खनिज दोहन, सामूहिक निर्माण और कृषि परियोजनाओं का संगठन, एक स्वतन्त्र लेखा प्रणाली के प्रारम्भिक विकास, नजदीकी इलाकों के साथ व्यापार तथा विदेशी दुश्मनों को हराने और मिस्र के प्रभुत्व को मजबूती प्रदान करने हेतु सेना को प्रायोजित किया।

नील नदी घाटी सभ्यता 3100 ई. पू. के आस-पास, प्रथम फैरो के शासन के तहत ऊपरी और निचले मिस्र के राजनीतिक एकीकरण के साथ समाहित हुई और अगली तीन सदियों में विकसित होती रही। इसका इतिहास स्थिर राज्यों की एक शृंखला से निर्मित है, जो सम्बन्धित अस्थिरता के समय द्वारा विभाजित है जिसे मध्यवर्ती काल के रूप में जाना जाता है। प्राचीन मिस्र नवीन साम्राज्य के दौरान अपने शिखर पर पहुँचा जिसके उपरान्त इसने मन्द पतन के काल में प्रवेश किया। इस उत्तरार्द्ध अवधि के दौरान मिस्र पर कई विदेशी शक्तियों ने विजय प्राप्त की। 1000 ई. पू. तक मिस्र कई छोटे-छोटे भागों में बँट गया और फैरो का साम्राज्य समाप्त होता जा रहा था। इस अवधि में शक्तिशाली पड़ोसी राज्य ने मिस्र पर हमला करके यहाँ शासन स्थापित किया। 31 ई. पू. में मिस्र को रोमन शासकों ने अपना प्रान्त बना लिया।

Scanned with OKEN Scanner

मिस्र : नील नदी का उपहार (Egypt : Gift of the Nile River)

मिस्र की प्राचीन सभ्यता के विकास में नील नदी की बहुत बड़ी भूमिका मानी जाती है। लगभग 452 ई. पू. में मिस्र की यात्रा करने वाले ग्रीक इतिहासकार 'हेरोडोटस' का इस सन्दर्भ में कथन सत्य प्रतीत होता है कि "मिस्र नील नदी का उपहार है।" हेरोडोटस को इतिहास का पिता भी कहा जाता है। **जे. एच. ब्रेस्टेड** इस सम्बन्ध में लिखते हैं कि "नील नदी हमारा एक विशाल ऐतिहासिक ग्रन्थ है, जिससे हमें बर्बर असभ्यता से लेकर सभ्यता तक क्रमानुसार रूप से मानव के प्रथम उत्थान का ज्ञान होता है।" नील नदी मिस्र के हृदय में प्रवाहित होती है और लगभग 50 किमी चौड़े एवं 800 किमी लम्बे भू-क्षेत्र को उर्वर बनाती है। इसी वजह से नील नदी को मिस्र की सभ्यता की जननी कहा जाता है। सेवाइन के अनुसार, "यदि नील नदी न होती तो मिस्र एक विशाल रेगिस्तान बन गया होता।" प्राचीन मिस्र के सभी महत्वपूर्ण नगर जैसे—मेम्फिस, काहिरा, सिकन्दरिया इत्यादि नील नदी के तट पर बसे हुए थे। सम्पूर्ण नगर में सिंचाई के लिए पानी की आपूर्ति नील नदी से ही होती थी। लगभग 5000 वर्ष पहले सिकन्दरिया मिस्र का महत्वपूर्ण बन्दरगाह और व्यापार का केन्द्र था। इस तरह नि:सन्देह मिस्र की सभ्यता नील नदी का उपहार है। इसे सन्दर्भ में निम्नलिखित रूप से स्पष्ट किया जा सकता है—

उर्वर भूमि की उपलब्धता (Availability of Fertile Land)—मिस्रवासियों को जीवन जीने के लिए अन्न की आवश्यकता थी। अत: नील नदी उनको उपजाऊ भूमि प्रदान करती थी। नील नदी में प्रत्येक वर्ष भयंकर बाढ़ आती है जो मई से आरम्भ होकर अक्टूबर-नवम्बर तक रहती है। वास्तव में गर्मियों के शुरुआत में मध्य अफ्रीका में मूसलाधार बारिश की वजह से विक्टोरिया, कयोगा एवं अल्बर्ट झीलों में अनन्त जल के इकट्ठा होने और नील की सहायक नदियों के उद्गम स्थल वाले पर्वत क्षेत्रों में बर्फ पिघलने की वजह से नदी का जल-स्तर बढ़ने लगता है। अक्टूबर के अन्त या नवम्बर की शुरुआत तक पूरी घाटी जलमग्न हो जाती है जिससे किनारे टूट जाते हैं और खेत डूब जाते हैं। तेजी से बहती हुई नदी अपने साथ काफी मात्रा में शैवाल, काई एवं मिट्टी लेकर चलती है और इसे बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में छोड़ देती है। नवम्बर के प्रथम सप्ताह से नदी का जल-स्तर घटने लगता है और दोनों किनारों के मैदान धीरे-धीरे बढ़ने लगते हैं। बाढ़ की वजह से ये मैदानी क्षेत्र पर्याप्त मात्रा में नमी सोख लेते हैं एवं इन मैदानी भागों में काली उपजाऊ मिट्टी की परत इकट्ठी हो जाती है। प्राचीन काल में सिंचाई हेतु कृत्रिम साधनों की अनुपलब्धता होने की वजह से मिस्रवासी नील नदी के दोनों किनारों पर बड़े-बड़े तालाब बना लेते थे। बाढ़ आने पर इनमें पानी भर जाता था। इन्हीं में संचित जल की सहायता से सिंचाई हेतु प्रयोग किया जाता था। इस तरह नील नदी उर्वर मैदान निर्मित कर और सिंचाई की सुगमता प्रदान कर मिस्र के निवासियों के कृषि-जीवन की प्रेरणादायक माध्यम बनी। मिस्र के निवासियों ने अपना केलेण्डर भी नील नदी के हिसाब से बनाया हुआ था। उन्होंने केलेण्डर को तीन मौसमों में बाँट रखा था, जिसका पहला मौसम नील नदी के बाढ़ के समय तक रहता था, दूसरा मौसम जब फसलें उगाने का समय हो तथा तीसरा मौसम जब फसलें काटने का समय हो।

परिवहन की सुविधा (Transport Facility)—यातायात की दृष्टि से नील नदी का विशेष तौर से महत्व रहा है। नील नदी के जलमार्ग द्वारा ही मिस्र में व्यापार एवं वाणिज्य में प्रगति सम्भव हुई। सिकन्दिया की स्थापना के उपरान्त यह तत्कालीन जगत का महान व्यापारिक केन्द्र हो गया। इस तरह मिस्र की नील नदी राष्ट्रीय जलमार्ग बन गई। मिस्र देश के निवासी अपना उत्पादित माल अन्य देशों में ले जाते थे और बदले में ताँबा, मिट्टी की सामग्रियाँ, धातु के अस्त्र, वस्त्र और अन्य जरूरी चीजें आयातित करते थे। अत: इसी जलमार्ग के माध्यम से मिस्र उत्तर में भूमध्यसागरीय प्रदेश, उत्तर-पश्चिम में सीरिया और पूर्व में मेसोपोटामिया के साथ सम्पर्क बढ़ाने में सफलता प्राप्त कर सका।

राजनीतिक एकता की स्थापना (Establishment of Political Unity)—नील की भौगोलिक अवस्थिति ने मिस्र की बाह्य आक्रमणों से रक्षा करने में सहायता की। मिस्र के निवासियों में एकता की भावना का संचार नील नदी द्वारा उत्पन्न परिस्थितियों की वजह से हुआ था। नील नदी के दोनों ओर बाँध और नहर आदि बनाने हेतु पर्याप्त श्रम की जरूरत पड़ती थी। इसमें एक-दूसरे को परस्पर संगठित होकर कार्य करने का अवसर मिलता था। शनै:-शनै: मिस्रवासियों में एकता की भावना जागृत होने लगी, जिससे विपत्ति के दौरान संगठित

Scanned with OKEN Scanner